10/07/20

BA-I
Paper-I
Unite-5

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.
Mail ID:- rajgopal7765@gmail.com

Topic :→ Basic Introduction of Jain Philosophy.
(जैन दर्शन सामान्य परिचय)

जैन दर्शन बौद्ध दर्शन के समकालीन दर्शन है। जैन दर्शन के स्थापना के संबंध में चौबीस तीर्थंकरों की एक लम्बी श्रृंखला है। इसमें प्रथम ऋषभदेव एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर थे। तीर्थंकर जैन दर्शन में उन व्यक्तियों को कहा जाता है जो मुक्त हैं। इन्होंने अपने प्रयत्नों के बल से बंधन को त्याग कर मोक्ष को प्राप्त किया है। तीर्थंकर को जैन दर्शन में "जिन" शब्द से भी जाना जाता है। जिसका अर्थ है "विजय प्राप्ति करने वाला"। इन्होंने राग, द्वेष, मोह एवं माया से विजय प्राप्ति की है।

जैन दर्शन के 24 तीर्थंकर थे। परन्तु जैन दर्शन के समग्र विकास एवं व्यवहारिक रूप प्रदान करने का श्रेय महावीर स्वामी को जाता है। इनके उपदेशों पर ही मुख्यतः जैन मत आधारित है। बुद्ध की तरह महावीर जिनका बचपन का नाम वर्धमान था, राजवंश से संबंधित थे। इनका जन्म 599 ई० पू० में 'कुण्डग्राम' के ज्ञातृक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके माता का नाम त्रिशला एवं पिता का नाम सिद्धार्थ था।

माता-पिता के मृत्यु के पश्चात अपने बड़े भाई जो की राज्य के उत्तराधिकारी थे, से अनुमति लेकर 28 वर्ष की अवस्था में सन्यास ले लिये। इन्होंने 12 वर्ष की घोर तपस्या करके वृम्भिक ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे सम्पूर्ण ज्ञान को प्राप्त किये। इनके पत्नि का नाम यशोदा एवं पुत्री का नाम अनोज्जा प्रियदर्शनी था। इनके प्रथम शिष्य इनके दामाद (प्रियदर्शनी के पति) जामिल थे। एवं प्रथम शिष्या राजा बिम्बिसार की पुत्री चम्पा थी। इनके उपदेश की भाषा प्राकृत (अर्धमागधी) था। महावीर स्वामी की मृत्यु 72 वर्ष की आयु में पावापुरी (राजगीर) में हुआ। जैन तीर्थंकरों की जानकारी भद्रबाहु रचित 'कल्पसूत्र' में है।

जैन दर्शन के दो प्रमुख संप्रदाय हैं। वे हैं- श्वेताम्बर एवं दिगम्बर। भद्रबाहु के शिष्य दिगम्बर हैं। वहीं स्थुलभद्र के शिष्य श्वेताम्बर। श्वेताम्बर श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। वहीं दिगम्बर पूर्णतः नग्न रहते हैं। दिगम्बर आचार पालन में कठोर थे वहीं श्वेताम्बर थोड़ा उदार थे। इस तरह दोनों संप्रदायों में विवाद दार्शनिक सिद्धान्तों पर कम नैतिक सिद्धान्तों पर अधिक था।

Scanned with CamScanner

वार्षिक और बौद्ध दर्शनों के अतिरिक्त भारतीय विचारधारा की नास्तिक परम्परा में आने वाला तीसरा दार्शनिक संप्रदाय जैन दर्शन है। ई० पू० छठी शताब्दी में वैदिक धर्म एवं ब्राह्मणों के कर्मकाण्डों यज्ञ, होम श्राद्ध आदि के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप दो धार्मिक क्रान्तियों का सूत्रपात हुआ था। जिनका नेतृत्व गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी ने किया। गौतम बुद्ध बौद्ध दर्शन के सूत्रधार थे। वहीं महावीर स्वामी जैन परम्परा के सूत्रधार थे। उल्लेखनीय है कि महावीर स्वामी जैन दर्शन के पर्वर्तक नहीं थे, बल्कि 24 वें तिर्थंकर, व्यवस्थित एवं समग्र स्वरूप प्रदाता थे। इन्होंने ही जैन दर्शन को व्यवस्थित किया था।

जैन एवं बौद्ध दर्शन नास्तिक विचारधारा पर आधारित है। इसी कारण इनमें कुछ समानताएँ एवं कुछ असमानताएँ दृष्टिगत है। दोनों में समानताएँ :- वेद के प्रमाण को विरोध करने में, नास्तिकवादी जीवन दृष्टि में, ईश्वर की सत्ता के अविश्वास में तथा दोनों के जीवन दर्शन के इस में अहिंसा के महत्व को स्वीकार करने में। दोनों को कर्मवाद एवं पुनर्जन्म में विश्वास में। असमानताएँ :- जैन दर्शन आत्मा और पुद्गल (भौतिक पदार्थ) को नित्य मानता है। वहीं बौद्ध दर्शन इन दोनों को अनित्य मानता है। वहाँ बौद्ध दर्शन दो प्रमाण प्रत्यक्ष एवं अनुमान को मानता है वहीं जैन दर्शन तीन प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द को मानता है।

Scanned with CamScanner